अखण्ड महापीठ में स्वामी श्रीधर्मानन्द सरस्वती महाराज

(श्रीधर्मानन्द सरस्वतीजी श्रीश्रीमाँ के दर्शनार्थ प्रथम आश्रम में आये थे १६ अक्टुबर,२००८। इस सत्संग का विवरण विडियो रेकरडिंग के अनुसार निम्नलिखित है।)

धर्मानन्दजी :– "ओ माँ! आपको आज परेशान करने के लिये आये। माँ आप की कृपा है।" यह कहते हुए बाबा ने चेयर पर आसन ग्रहण किया, बाबा के सम्मुख ही श्रीश्रीमाँ अपने आसन पर सदाहास्यमुख से बैठी थी। समझ में आता है की आज श्रीश्रीमाँ अति आनंद में हैं।

श्रीश्रीमाँ ने बताया था, स्वामी धर्मानन्दजी सिर्फ सन्त नहीं, वह एक योगी–महात्मा हैं, जिन्होंने श्रीश्रीबाबाजी महाराज का अपनी आँखो से दर्शन किया है एवं इनके गुरूमहाराज महामुनि श्रीश्रीबाबाजी महाराज के संग भ्रमण करते हैं। हमारे आश्रम की तरफ से श्रद्धापूर्वक बाबा का स्वागत किया गया। इसके उपरांत बाबा ने सानन्द श्रीश्रीमाँ के संग कथोपकथन आरंभ करते हुए कहा–''लाहिड़ी महाशय का एक प्रसंग आता है। काशी में वह अपने शिष्य के साथ जा रहे थे। चलते–चलते शिष्य से बोले धोती फाड़ दे। थोड़ा आगे चलते एक ईंट आता है और उनके पैर का अँगुठा फट जाता है। तब उन्होंने अपने धोती को फाड़ के उससे अपने जख्मी अँगुठे को बाँध लिया। ठीक एक ही तरह आज गुरू माँ की दर्शन भी परमात्मा की लीला के विज्ञान के अनुसार हो रहा है, ठीक जैसे उनको जानकारी थी कि हम आयेंगे, ये सब ईन मूर्तियों की कृपा से।''(सामने आसीन श्रीश्रीसच्चिदानन्द परमहंस (सरोज बाबा), श्रीश्रीबाबाजी महाराज, श्रीश्रीनांगा बाबा और श्रीश्रीश्यामाचरण लाहिड़ी बाबा के प्रतिष्ठित विग्रह)

अखण्ड महापीठ में स्वामी श्रीधर्मानन्द सरस्वती महाराज के संग श्रीश्रीमाँ

श्रीश्रीमाँ :– "बाबा, ये महामुनिजी का स्थान है। ये मंदिर भी स्वप्नादिष्ट है। यह स्थान तीन नदीयों का संगम था, आदिगंगा, विद्याधरी एवं सरस्वती। ये मंदिर निर्माण के समय इसी स्थल के soil testing के समय देखा गया की सब गंगा मिट्टी है, बड़े–बड़े पत्थर और पेड़ के काण्ड हैं जैसे काठ कोयला बन गया!"

बाबा :– ''ये सब तो माँ गुरूकृपा से ही मिलता है। साधक तो मात्र उनका हुकुम का पालन करता है। पुरी में आप उनके समाधिस्थल पर गये थे क्या?(नांगाबाबा)

श्रीश्रीमाँ :– "हाँ बाबा।"

बाबा :– "पुरी में अच्छे–अच्छे सन्त हैं। वो एक साधना का स्थल है। कुछ सात–आठ साल पहले वहाँ एक वैष्णव सन्त रहते थे, १०८ वर्ष कि उम्र होगी। जंगल के किनारे।"

श्रीश्रीमाँ :– "हाँ, जंगलबाबा, उनका साथ भेट हुआ था, बाबा।

बाबा :– "उनका पास हम जाते–आते थे। एक देढ़ साल पहले देहत्याग किया। इसलिये बोला जाता है कि साधक का बीज नष्ट नहीं हुआ, वो हैं, कहीं–कहीं है, और इसी के ऊपर सृष्टि चल रही है, माँ, आज तो रस्ते में बहुत चर्चा हुआ, अच्छा time-pass हुआ।"

(अब श्रीश्रीमाँ ने उनके हिमालय के साधन जीवन सम्बन्धित जिज्ञासा प्रकट की)

बाबा :– "जीवन यात्रा में, माँ, अनेक उठाव–चढ़ाव, up/down रहा–साधनकाल में सबसे ज्यादा है। मैं मेरे गुरूजी, परमहंसजी नित्यानन्द सरस्वती। पहले की बात मैं इनको सुनाया (पार्थदा)। गंगोत्री से आगे चीरबासा। चीरबासा में एक गुफा में हम रहते थे–उससे आगे गोमुख। गोमुख से आगे तपोवन। तपोवन में उस समय सिमलाबाबा थे। कभी–कभी सिमलाबाबा के वहाँ चले जाते थे। वो खिचड़ी खिलाते थे, रात में हम चले आते थे। एक दिन का प्रसंग है रात में खिचड़ी खाकर हम बोले कि, नन्दनवन होते हुए सीधे अपने गुफा चले जायेंगे। वहाँ कोई पगडण्डी नहीं थी। वहाँ तो पहाड़ को निशान मान के चले जाओ। नीचे बड़ा–बड़ा पत्थर है। पैर जैसा ईधर–उधर हुआ तो पैर में मोच आ जाएगा। सुबह खिचड़ी खा के हम चले और मुश्किल से दो किलोमीटर चल के थक गए। यही वस्त्र हमारे रहते थे कोई भी गरम कपड़ा नहीं रहता था। पास में मेरा कुछ माचिस भी नहीं है हमने सोचा थोड़ा सा आराम कर लें। एक छोटा पत्थर में बैठ गये फिर हमें नींद आ गयी। गोमुख का वहाँ एक नियम है। ढ़ाई बजे के बाद वहाँ snowfall होता है। बरफ गिरने लगा तो अंधेरा छा गया। मेरा दिशा भ्रमित हो गया–सोचा, हम किधर जाये? पास में एक कम्बल भी नहीं। पास में कोई जगह या गुफा नहीं। इसी स्थिती में मुझे लगा की आज मैं बचेगा नहीं। बरफ गिरना चालू होता है तो चार/पाँच फिट हो ही जाता है। फिर एक जटाधारी महात्मा आये। हमने हाथ जोड़ा। वो हमें बहुत गालियाँ दी। –क्या यहाँ मरने के लिये आये है? मैं कहा–मेरी भुल हो गयी। वे कहा –चलो, मेरे

साथ-साथ चलो। दूर गये तो हमें एक गुफा मिल गयी। वहाँ चार कम्बल थी। दो कम्बल नीचे बिछाने के लिये, और दो कम्बल बदन में देने के लिये। .....बोले, बेटा, खा ले, तो हमने खा लिया। वे बोले–बेटा, सो जा, फिर हम बदरीनाथ में मिलेंगे। कम्बल लेकर हम सो गये, जब सुबह नींद खुली है तो हम देखते हैं कि, हम वहीं पत्थर के पास बैठे हैं!! –ना वो गुफा है, ना वो कम्बल है, ना वो महात्मा है! हमको लगा शायद हमने सपना देखा है। लेकिन, हमने अंगुली मुँह में घुमा कर देखा कि आलू, छोले सब लगा हुआ है। सुबह मैं एक-देढ़ किलोमीटर घूमा और ढूंढ़ा, लेकिन, मुझे गुफा नहीं दीखाई दिया! फिर मैं सिमलाबाबा के पास आया और पूछा, बाबा यहाँ और भी कोई महात्मा रहता है?–बोले नहीं! मैं इतने सालों से हूँ।

फिर हम बदरीनाथ गए, और वहा गुरूमहाराज का दर्शन मिला, वो मुझे साधन करवाये। शुरु-शुरु में मुझे गुफा के बाहर बैठा दिया, बोला 'भजन करो।' वो गुफा के अंदर रहे धुनी लगा के। मैं गुफा के बाहर बैठे। वहाँ snowfall चल रहा था। नया साधक, थोड़ा नींद आ गया। उसी समय गुरूमहाराज आ गये, बोले, तू सो रहा है? तब वो उसी समय इस चिमटा मारा था। जहाँ पर चिमटा मारा था,यह है दाग। बोले, क्या मैं तेरे को कोई चिठ्ठी दिया था कि मेरे पास आकर मदद करो? अपने माँ-बाप को रूलाता हुआ छोड़कर यहाँ आया है तो क्या सोने के लिये आया है? वो दिन से लेकर आज तक नींद आने से पहले चिमटा मुझे याद आता है। यह सब एक परीक्षा है।

एकदिन का प्रसंग है। देखा, एक छोटा झोला में बहुत कुछ आया है। सब खोल के बैठा और बहुत खुश हो गया। देखा, घी है, बदाम है, सुजी है। गुरूजी बोले, 'बेटा हलवा बना, बढ़िया हलवा बना।' मैं भी अच्छी तरह से बनाया और गुरूमहाराजजी के पास रखा। गुरूमहाराज ने हलवा का पात्र लिया और एक करेला निकाल के हमें देकर बोले, 'ले बेटा, यह करेला ले और गेट के पास खड़ा होकर खा। हमने एकबार हलवा देखा और एकबार करेला को देखा, फिर करेला ले लिया। मैं गुफा के बाहर बैठ के करेला खा रहा हूँ; पता नहीं इतने बड़े-बड़े करेला कहाँ से लाता है? मैं करेला खा रहा हूँ, रो भी रहा हूँ, वो मेरे को बता-बता के हलवा खा रहा है। पुरे सात दिन तक, उन्होंने मुझसे हलवा बनवाया, मेरे को करेला खाने को दिया; आँठवें दिन, हलवा बनवाया, उन्होंने मुझे करेला दिया और मेरे हाथ से करेला ले लिया और हलवा खाने दिया। उसदिन गुरूजी करेला खाया। तो गुरू ऐसा बहुत परीक्षा लेते हैं, शिष्य अपने को भाग्यवान सोचना चाहिये, दोष नहीं देखना। गुरू में कभी संशय नहीं रखना, परमात्मा बहुत आनन्द प्रदान करेंगा।"

इसबार धर्मानन्दजी उनके साथ आये एक दम्पति, जो बाबा के शिष्य थे उनके प्रति बोले, "बेटा, एक बात बता। तुम दोनों की शादी हुई है। उससे पहले तुम दोनों कितना साथ घुमते थे?" उस शिष्य ने कहा, "एक दूसरे को जानते नहीं थे।"बाबा :– "एक दूसरे को जानते नहीं थे। देखो हमारे कल्चर। हमारा इस चीज को समझो। शादी से पहले ये दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे। लेकिन अब शादी के बन्धन में आये, तो ये दोनों एक दूसरे को निभाने की कसम खाया है। पर हम गुरू बनाते हैं किसी को तो दो साल बाद उनको निभाने की कसम तोड़ देते हैं। ये एक दुसरे को नहीं जानते थे लेकिन अब इसके बच्चों के बच्चो हो गये है। फिर हम गुरू के प्रति क्यों संशय करते हैं? इसलिए गुरू को श्रद्धा करो, विश्वास करो और उसको परीक्षा को आशीर्वाद समझो।"

श्रीश्रीमाँ :- "बाबा क्या आप श्रीश्रीबाबाजी महाराज का दर्शन किया?"

बाबा :- "हाँ माँ, दो बार बाबाजी महाराज से हमारा दर्शन हुआ। –जैसे ही बाबा ने बाबाजी महाराज के दर्शन के बारे में वर्णन करना प्रारम्भ किया, कैमरा बंद हो गया। आश्चर्य कि बात यह है की बाबाजी महाराज का प्रसंग समाप्त होते ही कैमरा स्वत: शुरू हो गया। इस तरह कि घटना पहले भी बहुत बार घट चुकी है! इस कारण श्रीधर्मानन्द स्वामीजी के मुख से बाबाजी महाराज के दर्शन के बारे में जो सुना है उसे उसी रूप में यहाँ लिपिबद्ध किया जा रहा है।

–धर्मानन्द जी जब बद्रीनाथ की गुफा में गुरोपदेशानुसार साधनरत थे, उस समय एक रात्रि वह साधना में बैठे थे, उनकी आँखे बंद थी,अचानक उन्हें ऐसा महसुस हुआ कि उनके आँखो के सामने खुब powerful प्रकाश पड़ने लगा। उसके बाद सब आलोकित होने पर धर्मानन्दजी ने आँखे खोलकर देखा की उनके सम्मुख दो जन, एक पुरूष एवं एक नारी, उस ज्योति के मध्य दंडायमान! उनको दर्शन देकर वह दो महात्मा फिर अंतर्हित हो गये। प्रथम दिन धर्मानन्दजी समझ नहीं सके कि वे कौन हैं? उसके बाद तीन मास के मध्य फिर एकदिन उन्होंने दर्शन पाया। तब उन्होंने ही धर्मानन्दजी को अपना परिचय बता कर चले गये। – श्रीधर्मानन्दजी ने कहा कि यही थे महामुनि श्रीश्रीबाबाजी महाराज व माताजी, श्रीश्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय के गुरूदेव व गुरूमाता। **–मातृचरणाश्रित मोहित शुक्ल।**

आगामी अनुष्ठान सूची

रंगपूर्णिमा (होली):– : २८ फरवरी, रविवार
रामजन्मोत्सव :– २४ मार्च, बुधवार
प्रथम बैशाख :– १५ अप्रेल, बृहस्पतिवार